Knowledgeable Research (KR) 2026, Special Vol., (5):01
ISSN: 2583-6633, CODEN: KRABAU
International open-access peer-reviewed refereed monthly journal
https://knowledgeableresearch.com/index.php/1

कृत्रिम मेधा और मानवीय अभिव्यक्ति का भविष्य

अनामिका*
हिंदी विभाग, रामगढ़ कॉलेज, रामगढ़

शोध सार

इक्कीसवीं सदी की चौथाई सदी बीत गई। इन सालों में दुनिया जैसे बिल्कुल बदल चुकी है। इन वर्षों में बदलाव की रफ़्तार इतनी तेज़ रही है कि हम दौड़ती हुई हमारी सभ्यता का हिस्सा बने हुए हैं। हमारी स्मृति में बदलाव की रफ़्तार इतनी तेज़ है कि कुछ भी टिक नहीं रहा। तकनीक ने स्मृति पर हमारी निर्भरता भी घटा दी है। कुछ भी जानना हो, उसके लिए इंटरनेट और अब तो एआइ यानी कृत्रिम मेधा भी मदद करने को तैयार है। देखें तो यह याद रखने का नहीं, भूलने का दौर है। अभी तो कृत्रिम मेधा पर परनिर्भरता बढ़ती जा रही है। शिक्षा के महत्वपूर्ण टूल की तरह उच्च शिक्षा जगत में भी उसने अधिकार जमा लिया है।कहें तो आने वाले पच्चीस साल इन चुनौतियों को पहचानने और एक सपोर्ट सिस्टम विकसित करने में लग जाएंगे।

बीज शब्द: *पारिस्थितिकी तंत्र, वेब क्रांति, अकादमी चुनौती, प्रशिक्षण, मूल्यांकन, जीवन शैली, सभ्यता, संस्कृति।*

Received: 11/12/2025
Accepted: 24/01/2026
Published: 31/01/2026

***Corresponding Author:**
अनामिका
Email: 123anamika111priya@gmail.com

ऐल्विन टॉफ़लर अपनी किताब 'फ्यूचर शॉक' में मानव सभ्यता की बात करते हुए कहते हैं कि धरती पर क़रीब 800 जीवन चक्र बीत चुके हैं। टॉफ़लर के मुताबिक इसमें 650 जीवन चक्र तो गुफाओं में कट गए। आख़िरी सत्तर जीवन चक्रों में मनुष्य ने भाषा विकसित होने के बाद एक जीवन चक्र से दूसरे जीवन चक्र तक अनुभव का हस्तांतरण करना सीखा। आख़िरी 6 जीवन चक्रों में लोगों ने छपे हुए शब्द देखे। आख़िरी दो जीवन चक्रों में बिजली के मोटर का इस्तेमाल हुआ। टॉफ़लर कहते हैं कि बीते दो जीवन चक्रों में परिवर्तन की रफ़्तार इतनी तेज़ रही है कि उसने एक तरह का 'कल्चर शॉक' यानी सांस्कृतिक झटका- दिया है।

आज का जीवन कृत्रिम मेधा की गिरफ्त में है। खासकर आज के युवा कृत्रिम मेधा के बगैर जीवन की परिकल्पना नहीं कर पा रहे। उन्हें कृत्रिम मेधा की मदद से बहुतायत काम करना पसंद हैं। सच है कि कृत्रिम मेधा के इस्तेमाल ने उनके समय और उनकी ऊर्जा की बचत की है। पर इसका एक बड़ा नुकसान यह हुआ है कि व्यक्ति की अपनी मौलिकताएं खंडित हुई हैं। उसकी कल्पना, स्मृति और कार्य क्षमता का ह्रास हुआ है।

हमारी चिंताएं तब बढ़ जाती हैं जब हम देखते हैं कि उच्च शिक्षा के क्षेत्र में कृत्रिम मेधा यानी एआइ इंटेलिजेंस ने सीखने-सिखाने की पद्धतियों को आत्यांतिक तेज़ी से प्रभावित किया है। यह तकनीक जितनी सुविधाजनक है ,उतनी ही तरह की गंभीर चुनौतियां भी इससे जुड़ी हैं। आज उच्च शिक्षा संस्थानों के पास इन चुनौतियों को समझना के बाद भी तो ठोस समाधान उपलब्ध नहीं है, जो कृत्रिम मेधा का विकल्प बन सके।

यह सच है कि छात्रों को असाइनमेंट, शोधपत्र या उत्तर आसानी से उपलब्ध हो जाते हैं, पर यह एक तरह का नकल है। कई बार शोध पत्र की

मौलिकता नकल जान पड़ती है। मौलिकता के अभाव में अकादमिक मूल्य संकट में दिखलाई पड़ते हैं। शोध कार्य के लिए जो समर्पित मानस की जरूरत है, वह कहीं खोता जा रहा है। डाटा तो सुलभ है पर काम की गुणवत्ता नहीं दिखती। उच्च शिक्षा के मानदंडों में गुणवत्ता प्राथमिक और आत्यंतिक जरूरत हैं। ऐसे में वास्तविक योग्यता का आकलन चुनौती पूर्ण होता है।

जिस तरह समाज असमानता और विभेद के बीच है, उसमें सभी छात्रों के पास एक समान उन्नत तकनीक या टूल्स हो इसकी कल्पना बेमानी है। बस बहुत से ग्रामीण इलाकों के गरीब विद्यार्थी सुविधा भोगी परिवार के विद्यार्थियों के सामने न्यून संसाधन के साथ कंपीट करने की स्थिति में नहीं होते। इससे शैक्षणिक वातावरण में असमानता और असंतोष बढ़ता है। सुविधा सम्पन्न छात्र आगे निकल जाते हैं जबकि ग्रामीण या आर्थिक रूप से कमजोर छात्र पीछे रह जाते

हैं। सबका साथ और सबका विकास की हमारी मूल अवधारणा और मानवोचित मूल्य खंडित होता है।

दूसरी बात यह है कि जिस अनुपात में विद्यार्थी तकनीकी तौर पर समृद्ध हैं, शिक्षक बहुत पीछे चल रहे हैं। अधिकांश शिक्षक कृत्रिम मेधा के विविध प्रयोग और उसके प्रभावों से अपरिचित हैं। नई पीढ़ी की तुलना में उनके लिए तकनीक उतना सहज और दूरगामी नहीं है। नए माध्यमों के साथ असहज होने से , उसके आधिकारिक प्रयोग से वंचित शिक्षक समुदाय छात्रों द्वारा इसके दुरुपयोग को समझ नहीं पाते। उच्च शिक्षा की सबसे बड़ी चुनौती है कि शिक्षकों को तकनीक फ्रेंडली बनाया जाए। उनके उचित प्रशिक्षण की व्यवस्था भविष्य को ध्यान में रखते हुए आज उच्च शिक्षा की प्राथमिक जरूरत है।

बहुत पहले वाद विवाद प्रतियोगिताओं में अक्सर एक विषय होता था। विज्ञान वरदान या अभिशाप। शायद ही किसी ने कहा हो कि विज्ञान अभिशाप है। एक सभ्य समाज में वैज्ञानिक चेतना बुनियादी आवश्यकता है। आज का समाज तकनीकी ज्ञान को छोड़कर आगे नहीं बढ़ सकता। अब यह हाल यही है कि तकनीक का जो सकारात्मक पहलू है उसको विश्वसनीय ढंग से समझा और उसके अनुरूप खुद को तैयार किया जाए। आज हम आदिम युग में नहीं लौट सकते। विज्ञान और तकनीक के बिना जीवन की परिकल्पना अधूरी है। सुविधा भोगी समाज के अपने संकट हैं। उन संकटों की पड़ताल अत्यावश्यक है। आज डेटा की गोपनीयता और सुरक्षा एक अहम प्रश्न है।

हमारे व्यक्तिगत डेटा आज व्यक्तिगत नहीं रहे हैं। ऐसे में निजता का उल्लंघन और दुरुपयोग की आशंका रहती है। यह भी सही है कि आज सुरक्षा तंत्र भी पर्याप्त मजबूत हो रहा है। उच्च शिक्षा कृत्रिम मेधा की कमजोरी और इसकी ताकत दोनों से रूबरू हो, यह अत्यावश्यक है।

भारतीय गुरुकुल परंपरा में जो संवाद, वाद-विवाद व्यावहारिक प्रशिक्षण के साथ एक भावनात्मक सूत्र से बंधे होते थे। गुरु शिष्य परंपरा के अनूठे किस्से भारतीय संस्कृति में दर्ज हैं। गुरु-भाई संबंध भी गुरुकुल परंपरा की उपज थे। आज परंपरागत बुनियादी तंत्र ध्वस्त हैं। समकालीन शिक्षा व्यवस्था का मतलब सिर्फ सूचना का आदान-प्रदान रह गया है। समाज में ऐसी घटनाएं घट रही है जो इसके दुष्परिणाम की ओर संकेत करती हैं। संवेदना , माननीय मूल्य और प्रेरणा की कमी से भावी पीढ़ी जूझ रही है। ऐसे में उच्च शिक्षा की चुनौतियां काफी गंभीर है। शिक्षा सिर्फ डिग्री का माध्यम न बने, शिक्षा सिर्फ रोजी रोजगार माहिया करने की साधन के रूप में उपलब्ध न हो बल्कि रविंद्रनाथ टैगोर के उस कथन के साथ खड़ी हो कि शिक्षा व्यक्तित्व निर्माण की कला है।

सच है कि बदली स्थितियों में हमारी प्राथमिकताएं भी बदली हैं। शिक्षा कौशल से अधिक रोजगारपरक है । अभिभावक, शिक्षक हो या विद्यार्थी किसी को भी यह फिक्र नहीं कि शिक्षा उन्हें कुछ मूल्यों के साथ खड़ा कर रही है या नहीं!

ऐसे में अगर कृत्रिम मेधा का रचनात्मक उपयोग करना हो तो कई महत्वपूर्ण बिंदुओं पर विचार की आवश्यकता है।

इस समय का संकट यह भी है कि पारंपरिक नौकरियां आज बदल गई हैं। कृत्रिम मेधा ने बहुत सारे काम आसान बना दिया है। जिस काम के लिए पहले बहुत से कर्मचारियों की जरूरत थी। वह कम मानव संसाधनों में संभव है। सही है कि ऐसे में विद्यार्थियों को परंपरागत कौशल से कोई मुकम्मल जगह हासिल नहीं हो सकती। पाठ्यक्रम समय अनुकूल हों, तभी प्रासंगिक कहे जाएंगे। अकादमिक जगत को बहुत स्पष्ट नीतियां बनानी होगी। प्रशिक्षण और मूल्यांकन की प्रविधियां पर पुनर्विचार करना होगा। निश्चित तौर पर अकादमी जगत की चुनौतियां बहुस्तरीय है। नई पीढ़ी का तकनीक के सहज संबंध है पर किताबों से उसकी दूरी बढ़ी है। यह संकट फिलहाल बहुत बड़ा है।

आज मानव सभ्यता के तीन दौर की बात की- जा रही। पहली वेव कृषि क्रांति की आई थी जो कई हज़ार बरस चली। इसका समय नव पाषाण काल से शुरू होकर अठारहवीं सदी तक चला आता है। दूसरी वेव औद्योगिक क्रांति की थी जो बहुत तेज़ी से घटित हुई और क़रीब 300 वर्षों तक चली। और अब उत्तर औद्योगिक वेव है- सूचना तकनीक की।

हाल ही में प्रकाशित स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी के ग्लोबल आई वाइब्रेंसी इंडेक्स में भारत की कृत्रिम मेधा को तीसरी रैंकिंग दी गई है। जबकि 2023 तक वह सातवें स्थान पर था। पहले स्थान पर अमेरिका और दूसरे स्थान पर चीन है। एआइ की प्रकाशित वैश्विक रिपोर्ट में कहा गया है कि इस साल भारत इस क्षेत्र में तेजी से आगे बढ़ेगा। विगत 25 दिसंबर को ओपन एआइ के सीईओ सैम ऑल्टमैन ने कहा था कि अब ऊंचे वेतन वाली नयी नौकरियां सिर्फ ए पेशेवरों को मिलेगी। ऐसे में भारत में उच्च शिक्षा के एकेडमिक गढ़ों को अपने भावी पीढ़ी को इस संभावना के लिए तैयार करना होगा। सच है कि देश में एआइ पारिस्थितिक तंत्र का विस्तार तेजी से करना होगा क्योंकि एआइ का बाजार भी तेजी से बढ़ रहा है। अच्छी बात यह है कि दुनिया की लगभग 16% कृत्रिम मेधा भारत के पास है यहां अभी 6 लाख से अधिक एआइ पेशेवर हैं और 2027 तक यह आंकड़ा बढ़कर 12.5 लाख तक पहुंच जाने की उम्मीद है। इस तरह एआइ आधारित नौकरियों के बढ़ते अवसर के बीच नई पीढ़ी को एआइ पेशेवर के रूप में सुसज्जित करने की बड़ी

चुनौती उच्च शिक्षा जगत की है अगर यह इस परिप्रेक्ष्य में तुरंत कदम न उठाए गए तो प्रतिभाएं पिछड़ जाएगी और भारत बहुआयामी विकास में भी पीछे छूट जाएगा।

निष्कर्ष:- इस तकनीकी युग में शिक्षा की अपनी परंपरागत पहचान को बिना ध्वस्त किये भावी पीढ़ी के भविष्य को सृजनात्मक और सुरक्षित कैसे बनाया जाए यह आज का मूल प्रश्न है। कभी महात्मा गांधी ने कहा था कि एक विद्यालय खुलेगा तो सौ जेल बंद होंगे। क्या आज की उच्च शिक्षा व्यवस्था इस गुरुत्तर दायित्व को समझती है! तकनीक के साथ मानवोचित गुणों को संरक्षित रखने के उपाय ढूंढना अकादमिक जगत की एक बड़ी चुनौती हैं। शिक्षा आज के समाज को कहां लेकर जा रही है, यह एक सामयिक प्रश्न है। शिक्षा का सांस्कृतिक मूल्य भी है। निश्चित तौर पर वह मूल्य अध्ययन और सरोकारों से आता है। उच्च शिक्षा की चुनौती है कि कृत्रिम मेधा के इस दौर में किताबों को स्वीकार्य बनाये। विद्यार्थियों के सामाजिक सरोकारों को मजबूत करें।

संदर्भ ग्रंथ:-

1.एडविन टॉफलर की किताब ' फ्यूचर शॉक'

2.ग्लोबल एआइ वाइब्रेंसी(स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी)

3.(संपादकीय प्रभात) आलेख 'एआइ का वैश्विक केंद्र बन रहा भारत' लेखक- डॉ जयंती लाल भंडारी

4. रोड मैप फॉर जॉब क्रिएशन इन ए इकोनामी (2025 नीति आयोग की रिपोर्ट)

5. कृत्रिम बुद्धिमत्ता testbook.com

Copyright: © The authors. This article is open access and licensed under the terms of the Creative Commons Attribution License (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/)